Chap-4

चतुर्थ अध्याय

पुष्टिमार्गीय साहित्य

१. मुख्य पुष्टिमार्गीय गद्य साहित्य :-

१. वार्ता साहित्य ::

१. वार्ता शब्द की व्याख्या –

पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय में वार्ता साहित्य का अपना महत्व है। पुष्टिमार्ग में पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय के अनुयायियों से सम्बन्धित विभिन्न घटनाओं का संकलन 'वैष्णवन की वार्ता' कहलाता है। 'वार्ता' शब्द के अर्थ में अनेक तर्क विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए जा चुके हैं, किन्तु आज 'वार्ता' का अर्थ केवल कहानी से है जिसमें मनोरंजन के साथ उपदेशात्मक ध्वनि होती है। वार्ता में तत्कालीन समाज की, रीति–रिवाज की, धार्मिक–भौगोलिक वर्णन तथा प्रांतीय वातावरण एवं भाषा का रूप आदि भी देखने को मिलता है। वार्ता कभी भी, कहीं भी, किसी भी समय पर सुनी एवं सुनाई जा सकती है। वार्ता के पात्र सामान्यतः सार्वजनिक पात्र होते हैं जैसे–मनुष्य और उसकी सभ्यता, संस्कृति व लोक व्यवहार का आचरण आदि। तात्पर्य यह है कि वार्ता आदर्श, सदाचार, सामाजिक, संस्कृति व धार्मिक भावानाओं को अपने में समेट कर चलती है। वार्ता साहित्य का प्राचीन रूप हमें धार्मिक कथाओं में तथा गाथाओं में देखने को मिलता है। प्राचीन समय में धर्मोपदेशक अपने सम्प्रदाय के सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार के लिए कथा का साकार रूप जन साधारण के सामने रखते थे। जिसका असर जन–मानस पर सीधा व सरल रूप में पड़ता था। वर्तमान हिन्दी साहित्य में आधुनिक कहानी को इसी गाथा का, साकार कथा का विकसित रूप कह सकते हैं।[१]

२. वार्ता साहित्य का आरम्भ –

वार्ता साहित्य के आरम्भ के विषय में डॉ. हरिहरनाथ टण्डन का कहना इस प्रकार है–''वार्ता साहित्य का आरम्भ श्री वल्लभाचार्य जी के समय में उन्हीं के द्वारा मौखिक रूप में हुआ था। उसका विस्तार पीछे से दामोदर दास हरसानी एवं श्री विट्ठलनाथ जी द्वारा हुआ था। इसीलिए इन मौखिक प्रसंगों का उल्लेख गोस्वामी श्री गोकुलनाथ जी ने जो कि श्री विट्ठलनाथ जी के चतुर्थ पुत्र थे अपने संस्कृत ग्रन्थों की टीकाओं में भी किया है। जैसा कि 'वल्लभाष्टक' की टीका में कृष्णदास मेघन का अग्नि उठाने का प्रसंग।''[२] आगे डॉ. टण्डन का कहना है कि–'आचार्य जी ने अपने पुत्रों को समझाने के लिए मार्ग की सब वार्ता (अर्थात् चरित्र व सिद्धान्त) भक्ति की ज्ञानात्मक स्वरूप (और भगवत् लीला रहस्य) भावना को दामोदरदास के हृदय में रखा था। उनसे श्री गुसाँई जी ने ये बातें प्राप्त की थी।'[३] मौखिक वार्ता साहित्य का प्रमाण श्री गोपीनाथ जी और श्री पुरुषोत्तम जी के ग्रन्थों में भी मिलता है।[४] 'सम्प्रदाय प्रदीप' जिसकी रचना वि.सं. १६१० में हुई थी उसमें भी कुछ प्रसंगों का उल्लेख है। जिससे वार्ता साहित्य की प्राचीनता व प्रामाणिकता पर प्रकाश पड़ता है।[५] वार्ता सम्बन्धी अन्य प्रमाण 'सम्प्रदाय कल्पद्रुम' में मिलता है जो वि.सं. १७२९ में श्री हरिराय जी के शिष्य विट्ठलनाथ भट्ट जी ने रचा है –'वल्लभ विट्ठल वार्ता प्रगट कीन नृप भान।'[६]

डॉ. जय किशन प्रसाद खण्डेल ने भी डॉ. टण्डन के मत की पुष्टि करते हुए कहा है कि ''वस्तुतः जब महाप्रभु ने मन में संन्यास ग्रहण करने का निश्चय किया तब श्री गोपीनाथ जी और श्री गुसांई जी दोनों बालक ही थे। इसलिए मार्ग की सब वार्ता महाप्रभु ने अपने अनन्य सेवक दामोदरदास हरसानी को समझाई ताकि वह वार्ता उनके पुत्रों को बड़े होने पर हरसानी जी से प्राप्त हो सके और आगे चलकर यही वार्ताएँ वार्ता साहित्य की जन्मदात्री सिद्ध हुई। इस रूप में महाप्रभु का महत्व अक्षुण्ण रहेगा और वे वार्ता साहित्य के विषय एवं रूप के उद्भावक माने जायेंगे।''[७]

३. पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य का हिन्दी साहित्य में स्थान –

हिन्दी साहित्य की गद्य परमम्परा में वार्ता साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है, किन्तु हिन्दी साहित्य के कुछ विद्वानों ने वार्ता साहित्य को प्रामाणिक न मानते हुए संदेह की दृष्टि से देखा है। साथ ही दूसरी ओर श्री द्वारिकादास परीख, श्री कण्ठमणि शास्त्री, श्री दीन दयालु गुप्त, श्री प्रभुदयाल मीतल कुछ ऐसे विद्वान है जिन्होंने वार्ता साहित्य का गम्भीर अध्ययन किया है और वे सब इसे प्रामाणिक मानते हैं। इस विषय में श्री प्रभुदयाल मीतल ने लिखा है कि, इस साहित्य के यथासाध्य अवलोकन और मनन करने के उपरान्त मेरा निश्चित मत है कि–''यदि सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि से इस साहित्य का अनुसंधान एवं अध्ययन किया जाय, तो इसमें से ऐसी अमूल्य सामग्री संकलित की जा सकती है, जो प्राचीन हिन्दी साहित्य के महत्व की वृद्धि कई गुना अधिक कर सकती है, साथ ही वह हिन्दी साहित्य के इतिहास में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर सकती है।''[6]

इस प्रकार पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य के विद्वान श्री द्वारिका दास परीख ने '२५२ वैष्णवन की वार्ता' के विश्लेषणात्मक अध्ययन में अपने विचार कुछ इस प्रकार कहे हैं–''जिस प्रकार प्रस्तुत ग्रंथ की साम्प्रदायिक महत्ता है उसी प्रकार इसकी साहित्यिक महत्ता भी है। ब्रज भाषा हिन्दी साहित्य के प्राचीनतम एवं सर्वोत्तम नंददास जी प्रभृति अनेक महाकवियों की जीवनियाँ एक मात्र इसी ग्रंथ से प्राप्त होती हैं। उसी प्रकार उन कवियों के साहित्य का भी विशिष्ट परिचय इस वार्ता ग्रंथ से ही मिलता है। यही कारण है कि समस्त वार्ता साहित्य के प्रति शंका की दृष्टि से देखने वाले हिन्दी विद्वानों को भी इन ८४–२५२ वैष्णवन की वार्ता के ग्रंथों की शरण में आना ही पड़ता है। इन ग्रंथों के बिना सूरदास, नंददास प्रभृति महाकवियों का विस्तृत परिचय, उन बेचारों को नहीं मिल सकता है। इसी प्रकार ब्रज भाषा–हिन्दी के प्राचीनतम एवं परिष्कृत रूप का विस्तृत ज्ञान भी इन्ही वार्ता ग्रंथों से हिन्दी साहित्य को प्राप्त हो सकता है। इसलिए भी हिन्दी के वार्ता–विरोधी दल को हा–हा खा कर इन वार्ता ग्रंथों का आश्रय ढुंढ़ना पड़ता है। इस प्रकार

प्राचीन मध्यकालीन युग के ब्रज भाषा हिन्दी के महाकवियों एवं तत्कालीन भाषा विज्ञान के लिए हिन्दी साहित्य में ८४–२५२ वैष्णवन की वार्ताओं को अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। यही कारण है कि आज तक हिन्दी के किसी भी विद्वान प्राचीन मध्य युग के धार्मिक इतिहास व साहित्य के विषय में इन ग्रंथों को अपनी दृष्टि से ओझल नहीं रख सका है और न रख सकता ही है। इस प्रकार इन वार्ता ग्रंथों की साहित्यिक महत्ता भी अप्रतिहत है। इसी प्रकार मध्यकालीन धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं भौगोलिक ज्ञान–प्राप्ति में भी ये ग्रंथ अतीव उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं।''[९]

उपरोक्त विवेचन से वार्ताओं का साहित्यिक महत्व भी ज्ञात हो जाता है। अतः अति प्राचीन ब्रज भाषा गध के उत्कृष्ट नमूने के रूप में हिन्दी साहित्य के इतिहास में इन वार्ताओं का स्थान अमर है। मिश्र बन्धु, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, रामचन्द्र तिवारी, डॉ. रामकुमार वर्मा, प्रेम नारायण टण्डन तथा रामशंकर शुक्ल 'रसाल' सभी साहित्य इतिहासकारों ने अपने अपने इतिहासों में वार्ताओं का उल्लेख किया हैं और इसे उत्कृष्ट गद्य का नमूना बताया है।[१०]

४. वार्ता साहित्य की भाषा –

इन वार्ताओं में ब्रज भाषा के सम्पूर्ण रूप का दर्शन होता है। श्री द्वारिकादास परीख जी के शब्दों में तो 'वाताएँ ब्रज भाषा के मौलिक गद्य का स्वरूप प्रस्तुत करती हैं।' तथा 'ब्रज भाषा का सुव्यवस्थित और प्रौढ़ गद्यात्मक स्वरूप सर्वप्रथम इस वार्ता साहित्य में ही प्राप्त होता है।'[११]

श्री प्रभु दयाल मीत्तल का कथन है कि–'पुष्टि सम्प्रदाय का वार्ता साहित्य ब्रज भाषा साहित्य की अमूल्य निधि है। इससे ब्रज भाषा के आरम्भिक गद्य का स्वरूप ज्ञात होता है। इसके साथ ही इसमें १७ वीं एवं १८ वीं शतियों के उत्तरी भारत की धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता

है। इस प्रकार वार्ताओं का साहित्यिक एवं ऐतिहासिक महत्व स्वयं सिद्ध है।'[१२] शायद इसी कारण पुष्टि मार्गीय वैष्णव कहते हैं कि हमारे ब्रज बानी ही वेद हैं। पुष्टि मार्ग में ब्रज भाषा को 'पुरुषोत्तम भाषा' का सम्मान प्राप्त है।

५. पुष्टिमार्ग में वार्ता का महत्व –

पुष्टि सम्प्रदाय के आचार्य सार्वजनिक रूप से कथा कहने के अतिरिक्त अपने अंतरंग सेवकों के साथ एकान्त गोष्ठी भी किया करते थे। उस समय वे महत्वपूर्ण वार्ताएँ करते थे। उदाहरण के लिए वल्लभाचार्य जी दामोदर दास हरसानी से, विट्ठलनाथ जी चाचा हरिवंश आदि से, गोकुलनाथ जी कल्याण भट्ट आदि से और हरिंराय जी हरजीवनदास प्रभृति से इस प्रकार की एकान्त गोष्ठियाँ किया करते थे। उन एकान्त गोष्ठियों में जो वार्ताएँ होती थीं उनका महत्व सुबोधिनी आदि की कथा से भी अधिक समझा जाता था और उनके सुनने का सौभाग्य कतिपय अन्तरंग व्यक्तियों को ही प्राप्त होता था। निम्न लिखित उदाहरण से इन वार्ताओं का महत्व ज्ञात हो सकेगा–

''सो एक दिन श्री गोकुलनाथ जी चौरासी वैष्णवन की वार्ता करत कल्याण भट्ट आदि वैष्णवन के संग रसमगन होइ गये, सो श्री सुबोधिनी जी की कथा कहन की सुधि नांहि, सो अर्ध रात्रि होई गई। तब एक वैष्णव ने श्री गोकुलनाथ जी सों विनती करी, जो महाराजाधिराज ! आज कथा कब कहोगे ? अर्धरात्रि गई। तब श्री मुख से श्री गोकुलनाथ जी ने कही जो आज कथा फल कहत हैं। वैष्णवन की वार्ता में सगरो फल जानियो। वैष्णव उपरान्त और कछु पदारथ नाही हैं।''[१३]

विद्वानों के मतानुसार जब ये गुप्त वार्ताएँ भी लिपि–प्रतिलिपि के क्रम से प्रकट हो गयी तब गोकुलनाथ जी के आदेशानुसार हरिराय जी ने उनके संकलन, सम्पादन और लेखन की व्यवस्था की। तथा अपने अनुभव से जो अन्य सूचनाएँ एकत्रित की थी उनका भी इन वार्ताओं में उन्होने समावेश कर दिया था। इसके अतिरिक्त हरिराय जी ने गोकुलनाथ जी के कथनों की पूर्ति और उनके गूढ भावों

के स्पष्टीकरण के लिए अपनी ओर से 'भाव' नामक टिप्पणियाँ भी जोड़ दी थी। इस प्रकार वार्ताओं का बृहद् संस्करण प्रस्तुत हुआ जो 'लीला भावना वाली' अथवा हरिराय जी कृत 'भाव प्रकाश' सहित वार्ताओं के नाम से प्रसिद्ध हैं।[१४]

कोकिला अ़म्बाप्रसाद शुक्ल ने अपने शोध कार्य में यथेष्ट उदाहरणों द्वारा इस बात की पुष्टि की है कि वार्ता का प्रारम्भ एवं प्रचार श्री महाप्रभु जी के समय में हुआ और उसका सम्प्रदाय में सम्पूर्ण प्रचार श्री विट्ठलनाथ जी के समय में हुआ। श्री गोकुलनाथ जी ने इसको लिपिबद्ध किया तथा श्री हरिराय जी ने इस पर भाव प्रकाश का निर्माण किया तथा इसका प्रचार–प्रसार समस्त वैष्णव सेवक समाज में किया।

'पुष्टि प्रवाह मर्यादा' ग्रन्थ के आधार पर पुष्टि सृष्टि को वार्ता में भगवान के श्री अंग से उत्पन्न माना गया है।[१५] इस वार्ता साहित्य से हमें पुष्टिमार्ग के सिद्धान्तों की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है।

६. पुष्टिमार्गीय वार्ता के प्रकार –

वार्ताएँ तीन प्रकार की प्राप्त होती हैं – प्रसंगात्मक, संख्यात्मक और भावनात्मक। डॉ. जयकिशन प्रसाद ने लिखा है कि –''वाताएँ प्रसंगात्मक रूप में तो महाप्रभु द्वारा मौखिक रूप में प्रचलित हुई किन्तु इनको संख्यात्मक एवं रचनात्मक रूप श्री गोकुलनाथ जी ने और भावनात्मक रूप श्री हरिराय जी ने दिया। इस प्रकार वार्ताएँ प्रसंगात्मक, संख्यात्मक तथा भावनात्मक तीन रूपों में मिलती हैं।''[१६]

७. वार्ता साहित्य का वगीकरण –

इन वार्ताओं को हम मुख्यतः चार दृष्टियों से देख सकते हैं–साम्प्रदायिक व धार्मिक दृष्टि से, ऐतिहासिक दृष्टि से, साहित्यिक दृष्टि से और सामाजिक दृष्टि से।

१. साम्प्रदायिक व धार्मिक दृष्टि

इन वार्ताओं में पुष्टिमार्गीय वैष्णवों की भक्ति भावना, भगवद् राह तथा जीवन में पुष्टि सिद्धान्तों के आचरण की शुद्धता को देखा जा सकता है। इन वार्ता से पुष्टिमार्गीय निधियों के स्वरूपों के प्राकट्य की कथा, सेवा के प्रकार, गुरु का महत्व इत्यादि पुष्टि सम्प्रदाय के सम्पूर्ण स्वरूप का ज्ञान प्राप्त होता है। लोकभाषा अर्थात् ब्रज भाषा में लिखी होने के कारण ये वार्ताएँ शीघ्रता से जन साधारण के मानस को छु जाती हैं। अपने प्रभु को सर्वस्व समर्पित करने की भावना इन वार्ताओं में स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। डॉ. सत्याकुमारी शर्मा ने कहा है कि – ''यदि यह कहा जाय कि पुष्टिमार्ग के दार्शनिक एवं साम्प्रदायिक भक्ति सिद्धान्तों का पोषण करने के लिये ही इनका प्रणयन, संरक्षण एवं प्रसार किया गया है तो यह कोई अत्युक्ति न होगी।''[१७] वार्ता के प्रत्येक प्रसंग में हमें पुष्टिमार्गीय अनुग्रह की भावना का दर्शन होता है। देवर्षि कलानाथ शास्त्री का कथन है – 'कभी–कभी आधुनिक विचारक इस बात पर बहुत क्षोभ क्षेम करते हैं कि इनमें मिथ्या का सहारा लेकर आचार्यों की प्रभुता बतलाई हैं। मिथ्या का सहारा यों कि वार्ताओं में जगह–जगह भगवान को भक्तों से, आचार्यों से बोलते, उनके साथ उठते–बैठते और खाते–पीते बतलाया गया है। यह बात तार्किक मन को नहीं जँचती किन्तु इसका साम्प्रदायिक महत्व इसलिए है कि इस सम्प्रदाय में प्रभु के साथ इसी प्रकार की साहचर्य भावना और तादात्मय की अनुभूति प्रमुख है।'[१८]

'वार्ता ही भक्ति का फल है'–इस बात की और सभी आचार्य एवं संत संकेत करते हैं। इसीलिए पुष्टिमार्ग में वार्ता साहित्य का महत्व धार्मिक भाव से अधिक रहा है। तात्पर्य यह कि वार्ता साहित्य धार्मिक ग्रन्थ है।[१९] प्रत्येक वार्ता के मूल में धार्मिक भावना निहित रहती है। डॉ. जय किशन प्रसाद ने भी इसी तथ्य का निरूपण इस प्रकार किया है–'वार्ता साहित्य में जो धार्मिक प्रवृत्ति कार्य कर रही है वह है दैवी जीव को उनके मूल स्वरूप का ज्ञान कराते हुए उनको वृद्धवस्था से मुक्त कराने की भावना। दैवी जीवों का उद्धार ही वार्ता की मुख्य प्रवृत्ति है और यह मूलतः धार्मिक हैं।'[२०] डॉ. सत्या कुमारी शर्मा का कथन है–'इन

सभी वार्ता ग्रन्थों कें प्रणयन के पीछे एक सुदृढ धार्मिक प्रेरणा ही विद्यामान है, इसी कारण ये सभी वार्ताएँ एवं वार्ता प्रसंग अथ से इति तक धार्मिक सिद्धान्तों की व्याख्या को ही अपना प्रथम व अन्तिम लक्ष्य बनाए हुए हैं। विभिन्न भक्त चरित्रों का प्रमाण देते हुए इनमें किन्हीं ऐसे ही सिद्धान्तों, आचरणों एवं विचारों की मान्यता प्रदान की गई है, जो इनके प्रतिपादक धर्म के अनुरूप हो।'[२१]

अन्तः यह कहा जा सकता है कि वार्ता साहित्य का आरम्भ तो साम्प्रदायिक दृष्टि से हुआ है पर इसके निर्माण के पीछे धार्मिक भावना भी निहित रही है।

२. ऐतिहासिक दृष्टि

इन पुस्तकों में दी हुई वार्ताओं में उस समय की धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक स्थिति पर भी बड़ा महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है इसलिए इनका ऐतिहासिक महत्व भी कुछ कम नहीं है।[२२] देवर्षि कलानाथ शास्त्री का कथन है कि–'शोधकर्ताओं ने इन वार्ताओं में निहित ऐतिहासिक तथ्यों को छानबीन कर स्पष्ट कर दिया है कि इनमें वर्णित अनेक घटनाएँ सत्य है और ऐतिहासिक महत्व की है। विशेष कर तत्कालीन सेवकों और विद्वानों के सन्दर्भों से उनके समय निर्धारण में और उनके कृतित्व के बारे में कई ऐतिहासिक तथ्य पुष्ट हो सकते हैं यह महत्व भी इन वार्ताओं का माना गया है। उदहरणार्थ २५२ वैष्णवों की वार्ता में कृष्ण दास, कुम्भन दास, गोविन्द दास आदि अष्टछाप के कवियों, तानसेन, बीरबल, रानी दुर्गावती, टोडरमल आदि व्यक्तियों के संदर्भ मिलते हैं जो इतिहास पुष्ट हैं। जोधपुर के राठौर राजा कल्याणसिंह के पुत्र पृथ्वीराज जी पीथल के नाम से राजस्थान के डिंगल कवि के रूप में विख्यात है और जिनका 'बेलि कृष्ण रुक्मणि री' राजस्थानी साहित्य में प्रसिद्ध है, इस वार्ता में वर्णित है। पीथल का कृष्ण भक्त होने के कारण गुसाँई जी से सम्पर्क होना स्वाभाविक था । वार्ताओं में भावात्मक एवं अलौकिक अतिशयोक्तियाँ तथा ऐतिहासिक तथ्यों का नीरक्षीर विवेक

करने के लिए शोधकों को परिश्रम अवश्य करना पड़ता है किन्तु इनसे उस समय के सांस्कृतिक इतिहास के अनेक बहुमूल्य तथ्य निकल सकते हैं।'[२३]

३. साहित्यिक दृष्टि

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में वार्ता साहित्य को अभूतपूर्व स्थान प्राप्त है। इन वार्ताओं में अनेक कवियों एवं लेखकों के जीवन वृत देखने को मिलते हैं। वार्ता साहित्य में हमें हिन्दी साहित्य के अनेक मूधन्य कवियों के अज्ञात जीवन इतिहास का भी पता चलता है। साथ ही ब्रज भाषा का उत्कृष्ट साहित्य भी हमें इन्हीं वार्ताओं से प्राप्त होता है। अन्तः इन वार्ताओं का विस्तृत साहित्यिक महत्व व वर्णन पिछले पृष्ठों में वर्णित कर चुकी हूँ।

४. सामाजिक दृष्टि

इन वार्ताओं में मानव जीवन की तत्कालीन सभ्यता, संस्कृति व लोक जीवन का दर्शन होता है, जिस कारण इन वार्ताओं का सामाजिक महत्व बढ़ जाता हैं। पुष्टिमार्ग में सभी वर्णों हरिजन, हिन्दू–मुस्लिम, स्त्री–पुरुष सभी को समान अधिकार प्राप्त है। वल्लभाचार्य जी की इस सामाजिक एकता ने तत्कालीन समाज को फिर से संगठित करने का महत्वपूर्ण कार्य अपने भक्ति सम्प्रदाय के द्वारा किया था जिसका वर्णन हमें इन वार्ताओं से प्राप्त होता है। पुष्टि सम्प्रदाय में उन समस्त प्राणियों का स्वागत होता है जो अपना सब कुछ प्रभु के चरणों में समर्पित कर सकता है। इसके अनेक उदाहरण हमें इन वार्ता साहित्य से प्राप्त होते हैं। इसीलिए लगभग सभी पुष्टिमार्गीय वैष्णवों के घरों में हमें वार्ता साहित्य प्राप्त होता है तथा उन वार्ताओं का पठन–पाठन भी किया जाता है।

८. मुख्य वार्ता ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय ::

१. ८४ वैष्णवन की वार्ता –

इस वार्ता ग्रन्थ में महाप्रभु वल्लभाचार्य के उन शिष्य व भक्तों के चरित्र हैं जिनकी भक्ति अपने आप में एक आदर्श है। इस ग्रन्थ के अन्त में अष्टछाप के चार

कवि सूरदास, परमानन्द दास, कुम्भनदास, कुष्णदास की वार्तायें हैं। जो हिन्दी साहित्य के अमर कवि माने जाते हैं।

२. २५२ वैष्णवन की वार्ता –

इस वार्ता ग्रन्थ में गुसाँई विट्ठलनाथ जी के उन सेवक भक्तों के चरित्र हैं जिन्होने अपने पंद साहित्य से न केवल पुष्टिमार्ग के साहित्य को अपितु हिन्दी साहित्य को भी समृद्ध किया है – नंददास, छीत स्वामी, चतुर्भुज दास, गोविन्द स्वामी इत्यादि।

३. निज वार्ता, घरु वार्ता और बैठक चरित्र –

इन तीनों वार्ताओं में महाप्रभु वल्लभाचार्य के तथा उनके पुत्र गुसाँई विट्ठलनाथ जी के विशेष चरित्र प्रसंग दिए गए हैं। इन चरित्र प्रसंगों द्वारा पुष्टिमार्गीय सम्प्रदाय के इतिहास के साथ–साथ हिन्दी के मध्यकालीन धार्मिक इतिहास पर भी व्यापक प्रकाश पड़ता हैं।

४. श्री महाप्रभु वल्लभाचार्य की प्राकट्य वार्ता –

इस वार्ता ग्रन्थ में महाप्रभु वल्लभाचार्य के जीवन का क्रम बद्ध वर्णन प्राप्त होता है।

५. भाव सिन्धु की वार्ता –

इस वार्ता ग्रन्थ में ८४ और २५२ वैष्णवन में से कई ऐसे वैष्णवों के चरित्र प्रसंग दिए गए हैं जो साम्प्रदायिक सिद्धान्तों के भावों का उद्बोधन करते हैं जिससे सामान्य जन पुष्टिमार्ग को समझ सके।

६. श्री नाथ जी की प्राकट्य वार्ता –

इस वार्ता ग्रन्थ में श्री नाथ जी के प्राकट्य से लेकर उनके मेवाड़ पधारने तक का वर्णन अंकित है, जो वि.सं. १७२८ तक का ऐतिहासिक ढंग से किया हुआ वर्णन है जिससे तत्कालीन समय के इतिहास का पता चलता है तथा धार्मिक प्रवृत्तियों का अनुमोदन भी हो जाता है।

७. अष्टसखान की वार्ता –

इस वार्ता ग्रन्थ में ८४ और २५२ वैष्णवन की वार्ता में रहे अष्टछाप के जीवन चरित्र को एकत्रित कर प्रस्तुत किया गया है।

इन वार्ताओं में सेवकों का जीवन ही नहीं अपितु उनकी भक्ति का ऐसा अविरल स्त्रोत है जिसमें डूब कर हर वैष्णव अपने को कृपार्थ मानता है। पुष्टि सम्प्रदाय की इन वार्ताओं में कोमलतम रसमयी भावनाओं का ऐसा समन्वय है जिससे मनुष्य संसार में रह कर ही इस संसार चक्र को पार कर जाता है। इन वार्ताओं में जीवनं की सच्चाई, आध्यात्मिक दर्शन, भगवद् राह पर अधिक जोर दिया गया है। ये वार्ताएँ अपने यथार्थ रूप में अधुनिक हिन्दी कहानी का आदि रूप कही जा सकती हैं।

२. भावना साहित्य ::

पुष्टिमार्ग भावना प्रधान मार्ग है। अपने आराध्य के प्रति सच्ची भावना से सर्व समर्पण ही पुष्टिमार्ग का विधान है। पुष्टिमार्ग के सिद्धान्तों के रहस्यों के उद्घाटन के लिए गोस्वामी हरिराय जी ने भाव–भावना का सृजन वैष्णवों के लिए किंया। हरिराय जी ने ८४ और २५२ वैष्णवन की वार्ता पर तीन जन्म की भावना लिख कर इस भाव–भावना वाले साहित्य का आरम्भ किया। इन वार्ताओं के मूल में तद् व्यक्तियों के जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली तीन जन्म की कथाएँ दी गई हैं– शरण में आने से पहले का एक जन्म (आधि भौतिक जन्म), शरण में आने के बाद का दूसरा जन्म (आध्यात्मिक जन्म), तथा तीसरा जन्म जो मूल भूत आत्मा रूप है (आधि दैविक जन्म)।

गोस्वामी हरिराय जी ने ब्रज भाषा में सेवाक्रम एवं उत्सव भावना, निकुंज रहस्य भावना, श्री जी की स्वरूप भावना, सात स्वरूप की भावना आदि कई भाव–भावना वाले ग्रन्थों की रचना की।

इस प्रकार के भाव-भावना वाले साहित्य द्वारा पुष्टिमार्गीय आचार्यों ने पुष्टि सिद्धान्त की सरल व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

३. वचनामृत साहित्य ::

पुष्टिमार्ग के आचार्यों द्वारा अपने भक्तों के साथ की गई चर्चा, सत्संग, उपदेश आदि को 'आचार्य के वचनामृत' कहा जाता है। वार्ता साहित्य के मूल में वल्लभाचार्य और गुसाँई विट्ठलनाथ जी के वचनामृत की भूमिका महत्वपूर्ण रही है।

पुष्टिमार्ग में मुख्यत महाप्रभु वल्लभाचार्य, गुसाँई विट्ठलनाथ जी, गोस्वामी गोकुलनाथ जी, गोस्वामी हरिराय जी, श्री वल्लभ (काका), गिरधरलाल जी, गोवर्धनलाल जी आदि के वचनामृत प्रसिद्ध हैं। जो ब्रज भाषा, व गुजराती भाषा में प्राप्त होते हैं। इन वचनामृतों में वैष्णवों की महत्ता का दिग्दर्शन भी भली भांति हो जाता है।

४. अन्य गद्य साहित्य ::

इसके अलावा पुष्टिमार्ग के कई ग्रन्थों पर कई पुष्टिमार्गीय आचार्यों ने अपनी टीकाएँ लिखी हैं।[२४]

महाप्रभु वल्लभाचार्य, गुसाँई विट्ठलनाथ जी, गोस्वामी गोकुलनाथ जी, गोस्वामी हरिराय जी आदि आचार्यो के बैठक चरित्र भी उपलब्ध हैं। जो कुल १४१ विभिन्न पुष्टिमार्गीय आचार्यों के बैठक चरित्र हैं।

गुसाँई विट्ठलनाथ जी के संस्कृत एवं ब्रज भाषा में कुछ पत्र साहित्य है। तथा गोस्वामी हरिराय जी द्वारा अपने अनुज (योगी गोपेश्वर) को लिखित शिक्षा पत्र साहित्य भी पुष्टिमार्ग में अत्यन्त प्रसिद्ध हैं।

इनके अलावा कई महत्वपूर्ण यात्रा विवरण भी पुष्टिमार्ग में प्राप्त होते हैं जैसे 'श्री वल्लभ दिग्विजय' संस्कृत भाषा में यात्रा विवरण प्रस्तुत करता है। बैठक चरित्रों में भी पुष्टिमार्गीय आचार्यों के यात्रा विवरण सम्बन्धी उल्लेख प्राप्त होते हैं।

'श्री नाथ जी की नाथद्वारा यात्रा' आदि कई छोटे–छोटे यात्रा विवरण पुष्टिमार्ग में उपलब्ध हैं।

५. नई खोज से प्राप्त पुष्टिमार्गीय ब्रज भाषा के गद्य ग्रन्थ की सूची :: [२५]

१. महाप्रभु वल्लभाचार्य कृत – चौरासी अपराध

२. गोपीनाथ जी कृत–स्फुट वार्ता

३. गुसाँई विठ्ठलनाथ जी कृत–कोसी (ब्रज) की वार्ता तथा सफुट वार्ताएँ।

४. गोस्वामी गोकुलनाथ जी कृत–८४ तथा २५२ वैष्णवन की वार्ताएँ. श्री गुसाँई जी और दामोदर दास को संवाद, स्फुट वचनामृत, श्रीवर वाक्यांमृत, रस रत्न कोष, बनयात्रा, खट्रितु की वार्ता, भावना वचनामृत, उत्सव भावना, नित्य सेवा प्रकार, श्री जी के स्वरुप की भावना, श्री वल्लभाचार्य जी की ८४ बैठकन के चरित्र, श्री गुसाँई जी की २८ बैठकन के चरित्र, श्री गिरिधर जी की बैठकन के चरित्र, रहस्य भावना, घरु वार्ता, चरण चिन्ह की भावना, भाव सिंघु की वार्ता।

५. गोस्वामी हरिराय जी कृत–द्वादश निकुंज की भावना, चौसठ अपराध वर्णन, निज वार्ता, सात स्वरूपन की वार्ता, श्री महाप्रभु और भी गुसाँई जी के स्वरूप का विचार, महाप्रभु वल्लभाचार्य जी की प्रागट्य वार्ता, ८४ तथा २५२ वैष्णवन की वार्ता पर 'भावना' (टीका), महाप्रभु की प्रागट्य वार्ता पर भावना, निज वार्ता तथा घरु वार्ता की भावनाएँ, चरण चिन्ह की भावना (द्वितीय), सात स्वरूपन की भावना (द्वितीय); बसंत होरी, छप्पन भोग, छाक, बीडी–सेवा–नित्य लीला–उत्सव–बनयात्रा–श्री नाथ द्वारा; नवग्रह; सात बालकन के स्वरूप की भावना, श्री नाथ जी के चरण चिन्ह वर्णन, भावना त्रय (मूल लीला), समर्पण गधार्थ, रास प्रसंग, श्री गोकुलनाथ जी की बैठकन के चरित्र, ८४ भाषा शिक्षा के पत्र, जय प्रकार, ग्रंथात्मक भगवत्सवरूप–निरूपण, दास मर्म, मार्ग स्वरूप सिद्धान्त, पुष्टि पृढाव, श्री

स्वामिनी जी के चरण चिन्हों की भावना, द्विदलात्मक स्वरूप विचार, समर्पण गधार्थ (द्वितीय) और स्फुट वचनामृत।

इनके अलावा भी कई पुष्टिमार्गीय आचार्यों का गद्य साहित्य उपलब्ध है।

२. पुष्टिमार्गीय पद्य साहित्य :-

१. पुष्टिमार्गीय पद्य साहित्य :: यह तो सर्व विदित है कि पुष्टिमार्गीय पद्य साहित्य अष्टछाप काव्य के रूप में हिन्दी साहित्य की अमूल्य निधि है। इसमें अष्टछाप के कवियों ने श्री कृष्ण की लीलाओं का वर्णन किया है जो वात्सल्य, साख्य, दास्य, माधुर्य भावों की उत्कृष्ट रस धारा के रूप में आज भी प्रवाहित हो रहा हैं। अष्टछाप के अलावा बयालीस गोस्वामी आचार्यों का पद्य साहित्य प्राप्त होता है। साथ ही आठ गोस्वामी महिलाओं का नामाल्लेख भी मिलता है। अष्टछाप के अलावा अन्य **१०६** कवियों की काव्य कृतियों का वर्णन द्वारकादास परीख के शोघ कार्य से प्राप्त होता हैं। इनके सांथ आधुनिक काल में भारतेन्दु बाबु हरिश्चन्द्र का पुष्टिमार्गीय साहित्य के सृजन में महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

२. **पुष्टिमार्गीय मुख्य भक्त कवियों की तालिका ::** द्वारकादास परीख के शोध से प्राप्त ब्रज भाषा के पुष्टिमार्गीय भक्त कवियों की ग्रन्थ तालिका –[२६]

१. **अष्टछाप कवियों के नाम –**

सूर दास, परमानन्द दास, कुम्भन दास, कृष्ण दास, छीत स्वामी, गोविन्द स्वामी, चतुर्भुज दास, नन्द दास।

२. **गोस्वामी आचार्य गण –**

महाप्रभु वल्लभाचार्य, गोपीनाथ जी, गुसाँई विट्ठलनाथ जी, गोकुलनाथ जी, रघुनाथ जी, घनश्याम जी, कल्याणराय जी, हरिराय जी, वल्लभ जी काका, वल्लभ जी (यदुनाथ जी के पुत्र), वल्लभ जी (चन्द्रमाजी के घर के), गिरिधर जी (तृतीय गृह के), ब्रजभूषण (दो–तृतीय गृह के), ब्रजराय जी (सूरत), द्वारकेश जी

(पंचम गृह के), गोपीकालंकार जी (मट्ट जी महाराज), द्वारकेश जी (गन्नू जी), गिरिधरलाल जी (तृतीय गृह के) भक्त छाप, गोपेश्वर जी (हरिराय जी के भाई– द्वितीय गृह के), ब्रजाभरण जी, रमणलाल जी (मथुरा), बालकृष्ण लाल जी (तृतीय गृह), पुरुषोत्तम जी (ख्यालवाले), पुरुषोत्तम जी (तृतीय गृह), विट्ठलनाथ जी (तृतीय गृह), ब्रजपति जी (जोधपुर), ब्रजाधीश जी (जोधपुर), गोपाल लाल जी (कांकरौली), लल्लू जी (तृतीय गृह–सूरत से), गोपन गोविन्द जी, गोविन्दराय जी (तिलकायत), गोवर्द्धन लाल जी (वेरावल), कल्याणराय जी (मथुरा), गिरिधर जी (काशी), लाल गिरिधारी (नाथद्वारा), कन्हैया लाल जी (गोकुल), जीवन जी महाराज जी (बम्बई), गोकुलाधीश जी (बम्बई), मुकुन्दराय जी, गोवर्द्धनेश (नाथद्वारा)।

३. गोस्वामी स्त्री वर्ग –

सुन्दरवंता बहूजी, चंद्रावली बहूजी, जसोदा बेटी जी, कृष्णावती जी, चन्द्र बेटी जी, भामिनी बहूजी, कमलप्रिया बहूजी, शोभा माजी

अन्य १०६ कवि गण भी हैं।

मैंने पुष्टिमार्गीय साहित्य के अन्तर्गत संक्षिप्त में पुष्टिमार्ग के गद्य व पद्य साहित्य को प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

******

:: संदर्भ सूची ::

१. वार्ता साहित्य के सन्दर्भ में पुष्टिमार्गीय भक्ति का विकास–
(शोघ प्रबन्ध) ७९, लेखिका : कोकिलाबेन अम्बाप्रसाद शुक्ल

२, ३, श्रीमद् वल्लभाचार्य : व्यक्तित्व, सिद्धान्त और संदेश –(II)
(पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य और उसका महत्व – १३७)
लेखक : डॉ. कृष्णवल्लभ शर्मा

४, ५, ६, वार्ता साहित्य के सन्दर्भ में पुष्टिमार्गीय भक्ति का विकास – ४१ (शोघ प्रबन्ध)
लेखिका : कोकिलाबेन अम्बाप्रसाद शुक्ल

७. श्रीमद् वल्लभाचार्य : व्यक्तित्व, सिद्धान्त और संदेश – (II)
(पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य और उसका महत्व–१३७)

लेखक : डॉ. कृष्णवल्लभ शर्मा
८. पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ
(वल्लभ सम्प्रदाय के ब्रज भाषा साहित्य की खोज – ३६१)
लेखक : प्रभु दयाल मीत्तल
९. २५२ वैष्णवन की वार्ता– (भाग–३) (विश्लेषणात्मक अध्ययन–२) ले. द्वारकादास परीख
१०. गोस्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ
(वार्ता साहित्य और २५२ वैष्णव की वार्ता – २९३) लेखक : देवर्षि कलानाथ शास्त्री
११. श्रीमद् वल्लभाचार्य : व्यक्तित्व, सिद्धांत और संदेश –(॥)
(पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य और उसका महत्व–१८०)
लेखक : डॉ. कृष्णवल्लभ शर्मा
१२. अष्टछाप परिचय – ७४
लेखक : प्रभु दयाल मीत्तल
१३. पुष्टि पाथेय (वार्ता साहित्य की भावभूमि – १७३)
लेखक : डॉ. हरिहरनाथ टण्डन
१४. अष्टछाप परिचय – ८७, ८८
लेखक : प्रभु दयाल मीत्तल
१५. वार्ता साहित्य के सन्दर्भ में पुष्टिमार्गीय भक्ति का विकास (शोध प्रबन्ध) – (भूमिका–५)
लेखिका – कोकिलाबेन अम्बाप्रसाद शुक्ल
१६. श्रीमद् वल्लभाचार्य : व्यक्तित्व, सिद्धान्त और संदेश– (॥)
(पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य और उसका महत्व–१३८)
लेखक : डॉ. कृष्णवल्लभ शर्मा
१७. श्रीमद् वल्लभाचार्य : व्यक्तित्व, सिद्धान्त और संदेश– (॥)
(पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य और उसका महत्व–१३९)
लेखक : डॉ. कृष्णवल्लभ शर्मा
१८. गोस्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ
(वार्ता साहित्य और २५२ वैष्णवन की वार्ता – २९२)
लेखक : देवर्षि कलानाथ शास्त्री
१९. वार्ता साहित्य के सन्दर्भ मे पुष्टिमार्गीय भक्ति का विकास – (शोध प्रबन्ध) – (भूमिका–४)
लेखिका : कोकिलाबेन अम्बाप्रसाद शुक्ल
२०, २१, श्रीमद् वल्लभाचार्य : व्यक्तित्व, सिद्धान्त और संदेश – (॥)
(पुष्टिमार्गीय वार्ता साहित्य और उसका महत्व– १३९)
लेखक : डॉ. कृष्णवल्लभ शर्मा
२२. अष्टछाप परिचय

लेखक : प्रभु दयाल मीत्तल

२३. गोस्वामी अभिनन्दन ग्रन्थ
(वार्ता साहित्य और २५२ वैष्णवन की वार्ता – २९२)
लेखक : देवर्षि कलानाथ शास्त्री

२४. पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ,
(ब्रज भाषा का गध साहित्य– ४७९)
लेखक : श्री शीवनाथ

२५. पोद्दार अभिनन्दन ग्रन्थ,
(ब्रज भाषा का गध साहित्य– ४८९) लेखक : श्री शीवनाथ

२६. पुष्टि पाथेय, (ब्रज भाषा के पुष्टिमार्गीय भक्त कवियों की ग्रंथ तालिका–१३७)
लेखक : द्वारकादास परीख

******